ममता कालिया के कहानी–संग्रह 'थिएटर रोड के कौवे' में नारी–अस्मिता

*डॉ. चित्रा
**शिल्पा देवी

शोध सारांश

नारी के अस्तित्व की प्रतिष्ठा के लिए ही किया जाने वाला संघर्ष नारी अस्मिता के संदर्भों से जुड़ा है। समाज में, जब नारी की प्रतिष्ठा, उसकी सत्ता तथा अस्मिता को नहीं पहचाना गया, और उसे आवश्यक संदर्भों में भी तिरस्कृत किया गया, तब नारी के मन में निज के अस्तित्व बोध का प्रश्न जागा, तब उसने अपनी अस्मिता को विभिन्न क्षेत्रों में स्थापित करके अपनी आवश्यकता तथा अनिवार्यता को सिद्ध किया। भारत में वैदिक नारी, सभी धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों में सब कार्यों में सहभागिनी थी। वह इसीलिए अर्धांगिनी भी कहलाती थी। वह पुरुष के साथ कंधे–से–कंधा मिलाकर आगे बढ़ती थी। किन्तु कुछ समय के अन्तराल में, राजनीतिक संघर्षों और बाह्य दखलअंदाजडी तथा देश पर विभिन्न जातियों के आक्रमणों के कारण वह घर–आंगन की चारदीवारी में सीमित होकर रह गई। हमारे देश के इतिहास का मध्यकाल, नारी अस्मिता के तिरस्कार का काल रहा है। परन्तु 19वीं शताब्दी के नवजागरण काल में नारी अपने अधिकारों के प्रति सचेत हुई, और उसने अपने हक के लिए संघर्ष शुरू किया।

आज भारतीय नारी अपने अधिकारों के लिए सजग है और वह हर क्षेत्र में, जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, अधिकार, पदवी सबमें समय–समय पर अग्रणी है। आज नारी परदे की रानी नहीं। वह अपने बुद्धि कौश से समाज के हर क्षेत्र में आगे है। वह सेना में, थल पर, नभ पर, समुद्र गर्भ में अपना विजयाभियान चलाती है। वह चिकित्सा, नीति–शास्त्र तथा रण कौशल के हर मोर्चे पर आगे बढकर अपनी शक्ति 'बुद्धि' का लोहा मनवा रही है और अपनी ही योग्यता का परचम लहरा रही है। आज लेखकों ने भी नारी की इस आन्तरिक ऊर्जा और शक्ति को पहचाना है और उनकी क्षमताओं को वे भिन्न–भिन्न स्तरों पर उजागर कर रहे हैं। आज के भारतीय संदर्भों में यहां की लेखिकाओं ने नारियों को उनकी योग्यताओं में पहचाना है और उन्हें भिन्न–भिन्न क्षेत्रों की नायिकाएं मानकर उनकी सत्ता, अस्मिता का परिचय दिया है। नारी की इन्हीं क्षमताओं 'शञ्चितयों' का कुछ परिचय हम लेखिका ममता कालिया के कहानी संग्रह 'थिएटर रोड के कौवे' में नारी की अस्मिता को चिन्हित कर सकते हैं कि वह किन–किन मोर्चों पर अपना दायित्व निभाती हुई भारतीय समाज में अपना रोल अदा कर रही है।

माँ

ममता कालिया की कहानी 'माँ', इसमें हमें नारी का वह पक्ष देखने को मिलता है जिससे एक स्त्री सबकुछ सहकर भी घर में एक गूंगे की तरह रह रही है इसमें मुन्नी अपनी माँ के बारे में बता रही थी कि कैसे उसकी दादी उसकी माँ को छोटी–छोटी बातों के लिए टोकती। यहाँ तक कि उसके खान–पान के लिए भी उन्हें टोका जाता है। एक उदाहरण से यह देखा जा सकता है दादी जब माँ से क्रुद्ध होती, यह कहतीं, बहुत गुस्सा आय रहा हो तो दो रोटी कम खाए लीजै, गुस्सा आपै उतर जाएगौ। अब सोचती हूँ तो मन में अजीब तडफ़न मचती है। दादी के राज में, मां का सारा संघर्ष रोटी से शुरू होता, रोटी पर आकर ही टूटता। किसी दिन दादी खुश हो गईं तो मां को एक रोटी ज़्यादा मिल गई या खरबूज़े की एक पतली सी फांक या बालों में लगाने के लिए तेल। अन्यथा सुबह–शाम माँ की खुराद थी मशक्कत और अपमान।

इस तरह इनकी इस कहानी में हम एक औरत को रोटी के लिए संघर्ष करते देख सकते हैं। 'माँ' कहानी में हम माँ को अपमानित होते देख रहे हैं। पूरी कहानी में माँ, हमें संघर्ष करती नारी के रूप में मिलती है, पर वह माँ है और

हमें इस कहानी में उसकी उमड़ती ममता दृष्टिगोचर होती है, जो अपनी बन्दर द्वारा उठाई गई बच्ची को बचाने के लिए किसी भी रूप में बदल सकती है, और कुछ भी सह सकती थी। दूसरी ओर दादी को कोई फर्क नहीं पड़ता। उसके मन में कोई भी ममता का बीज जाग्रत नहीं हो रहा था, वह मुन्नी को बचाने के खिलाफ ही बोलती जा रही है। मुन्नी को जब बचा लिया जाता है तब भी उसके चेहरे पर खुशी के बजाए, मुँह से अपशब्द ही निकल रहे होते हैं। वह बोलती है –''मैं तुझे छाती से चिपकाए–चिपकाए आंगन में उतर आई। छाती में दूध घुमड़ रहा था। औरतों की जमघट के बीच दादी बाल बिखेरे, विकराल मुद्रा में बैठी थीं, मुझे देखकर बोलीं, बहुत हो चुकी नौटंकी। अब चुप्पे से बैठ अंदर। आने दे बडके को आगरे से, बासै सब बताऊंगी। वो दो मुस्टंडे यों ही नहीं अपनी जान पर लेन गए। तेरे का लगते थे, ममेरे भाई या यार। जरूरत कोई पुरानी आसनाई रही होगी, नहीं तो कौन किसी की खातिर जान पे खेलतौ है। वह तो एकदम्मे लटक गए। अरे अपनौ आदमी जोखम नांय उठावै तो पराए की तो बात का? बता कौन थे वो छोरे।

आपकी छोटी लडक़ी

इसी तरह हम इनकी कहानी 'आपकी छोटी लडक़ी' को संघर्ष करते देख सकते हैं। उसका पूरा बचपन घर के कामों में गुज़र रहा है। टुनिया बहुत छोटी है, पर घर के सभी सदस्य उस पर निर्भर हैं। सभी उसी से काम करवाते हैं, चाहे पड़ोसियों के घर से खुछ लाना हो, या उनको देना हो सब काम टुनिया ही करती है। घर में टुनिया की बड़ी बहन भी है, पर वह कोई काम नहीं करती, और घर के सदस्य उसे कोई काम करने को बोलते भी नहीं। वह अपने हिसाब से अपनी ज़िन्दगी जीती है। और टुनिया को सारी कहानी में संघर्ष करते देखआ जा सकता है, कभी अपने अस्तित्व के लिए, कभी अपने आप को साबित करने के लिए, पर इज्ज़त उसकी बहन को ही मिलती है–

'आपकी लडक़ी की आवाज़ बहुत अच्छी है, इसका रेडियो ऑडिशन क्यों नहीं करवाते?' मुक्ति दूत जी ने कहा।

पापा उत्साह और गर्व से बताने लगे – उसे समय ही कहां है रेडियो के लिए। फिर रेडियो में वे कलाकार जाते हैं जो मंच अथवा टी.वी. पर अयोग्य सिद्ध होते हैं। रेडियो तीसरी श्रेणी की प्रतिभाओं के लिए है। यह तो स्टेज की नामी कलाकार है। आए दिन इसके शो होते हैं। बल्कि एक बार फिल्मों के लिए भी प्रस्ताव मिला। काफी नामी प्रोड्यूसर का था। लेकिन आप जानते ही हैं, बच्ची को वहां फंसाना तो बिल्कुल ग़लत है। दो साल से कथक सीख रही है। कॉलेज भी जाना रहता है। पढ़ाई में हरदम अवल आती है।

'कौन, यह टुनिया?'

'यह तो अभी बिल्कुल मूर्ख है। कुछ नहीं आता। वह मेरी बड़ी बेटी पवीहा।'

'नहीं सहाय साहब, मैं इसकी बात कर रहा हूँ, आपकी छोटी लडक़ी की। इसकी आवाज़ में एक संस्कार है। आजकल बहुत कम दिखायी देता है।' इस तरह हम यह जान सकते हैं कि टुनिया सबके लिए इतना कुछ करती है। हर एक काम में वह सबकी मदद करती है परन्तु फिर भी वह उसके घर वालों की नज़रों में मूर्ख है, नसमझ है। लेकिन इन सबके बावजूद भी टुनिया ने मुक्ति जी की एक ही बात सुनी और उसी प्रसंशा और वह खुश हो गई

'कुछ नहीं लेना–देना दुनिया को इस परिवार–पुराण से। अब लाख बार घर वाले उससे चाय बनवाएं, पानी मंगवाएं, सब्जी कटवाएं, कुछ नहीं व्यापेगा उसे। उसे आज यह कैसी संपदा मिल गई है? उसके कानों में ठुमरी–सी छोटी यह बात किस कदर ठुमक रही है, 'आपकी छोटी लड़की... आपकी छोटी लड़की।'

बोलनी वाली औरत

ममता कालिया की कहानी 'बोलने वाली औरत' में हम औरत के ऐसे रूप को देखते हैं जो खुद के हकों के लिए बोलती है, वह द्वेष, अहंकार या हिंसा कुछ बर्दाशत नहीं करती। वह स्वयं सब मुश्किलों का सामना करती है। शिखा इस कहानी का ऐसा पात्र है, जो कि अपनी सास के साथ पूरी बहस कर मुकाबला करती है, वह किसी से नहीं डरती। वह अंधविश्वास, रूढ़ीवादी सोच, सबका विरोध करते हुए अपने जैसी दिखती है। यहां तक कि शिखा का पति कपिल, एक बहुत समझदार व्यक्ति है। पर जब शिखा उसकी माँ के आगे बोलती है तो वह भी शिखा के आगे चिल्लाता है। शिखा कई बार सोचती है कि वह अब नहीं बोलेगी पर कभी न कभी बात पर फिर से बोल पड़ती, वह अपने अन्दर उठ रहे अनेक प्रश्नों, कल्पनाओं आदि का जवाब ढूँढती रहती है। कभी वह पड़ोसनों ने क्या पहना कौन सा मेकअप किया यह जांचती रहती। वह दूसरी ओर शिखा के घरवाले उसे बहुत बोलने वाला मानते, उनका मानना है कि वह बहुत ज्यादा बोलती है, बड़ों को जवाब देती है। वह अपने बेटे को कहती है कि हम इसे पटरी

पर ले आएंगे, अर्थात् इसकी बोलने की आदत कम करवा देंगे, शिखा दो बच्चों की माँ भी बन जाती है। पर उसकी सभ अभिलाषाएं अभी भी उसके अन्दर उमड़ी हैं। वह कपिल से कहती है कि हम कहीं बाहर चलते हैं, पर कपिल मना कर देता है। और यह बात उसकी सास को पता चलती है, तो उस पर क्रोधित होती है। और उदाहरण देती है –

बच्चों ने बात दादी तक पहुंचा दी। बीजी एकदम भडक़ गई, अपना काम–धंधा छोड़ अब काका जयपुर जाएगा, क्यों, बीवी को सैर कराने। एक हम थे, कभी घर से बाहर पैर नहीं रखा।

शिखा का जवाब आता है – 'और अब जो आप तीर्थ के बहाने घूमने जाती हैं, वह?' शिखा से नहीं रहा गया।

शिखा को बोलने वाला द्वन्द्व पहले आपनी सास के साथ था, लेकिन बाद में यह बोलने की लड़ाई उसके बच्चों के साथ चल पड़ती है। उसको लगता है कि उसके बच्चे बिगड़े हुए हैं, वह अच्छे से समझदारी वाला काम नहीं करते। वह न चाहती हुई भी बच्चों पर गुस्सा करती, और कभी–कभी तो उन्हें मारती भी। एक बार उसके बेटे ने भी उसके पलटकर मारा। शिखा आश्चर्यचकित रह गई, और घर में किसी ने भी बेटे को नहीं डांटा, सबने शिखा को ही सुनाया–

कपिल ने कहा, 'पहले सिर्फ मुझे सताती थी, अब बच्चों को भी शिकार कर रही हो।'

शिकार तो मैं हूँ, तुम सब शिकारी हो, शिखा कहना चाहती थी पर जबड़ा एकदम जाम था। होंठ अब तक सूज गया था। शिखा ने पाया, परिवार में परिवार की शर्तों पर रहते–रहते न सिर्फ वह अपनी शक्त खो बैठी है वरन् अभिव्यक्ति भी। उसे लगा वह ठूं, ले अपने मुंह में कपड़ा या सी डाले इसे लोह के तार से। उसके शरीर से कहीं कोई आवाज़ न निकले। बस, उसके हाथ–पांव परिवार के काम आते रहें। न निकलें इस वक्त मुंह से बोल लेकिन शद्ब्रद उसके अन्दर खलबलाते रहेंगे। घर के लोग उसके समस्त रंध्र बंद कर दें फिर भी ये शब्द अंदर पड़े रहेंगे, खौलते और खदकते। जब मृत्यु के बाद उसकी चीर–फाड़ होगी, तो यह शब्द निकल भागें शरीर से और जीती–जागती इबारन बन जाएंगे। उसके फेफड़ों से, गले की नली से, अंतडियों से चिपके हुए, ये शब्द बाहर आकर तीखे, नुकीले, कंटीले, ज़हरीले असहमति के अग्रलेख बनकर छा जाँगे घर भर पर। अगर वह इन्हें लिख दे तो मुँह सूजा हुआ है, पर मुँह बंद रखना चुप रहने की शर्त नहीं है। ये शब्द उसकी लड़ाई लड़ते रहेंगे। इस तरह से ममता कालिया ने अपनी इन तीनों कहानियों में नारी के भिन्न–भिन्न रूपों को प्रस्तुत किया है। इन तीनों कहानियों में हमें नारी के विभिन्न अस्तित्व तथा अभिनय देखने को मिलते हैं। कभी वह अपने हकों के लिए लड़ती दिखाई देती है, तो कहीं वह अपने व्यक्तित्व को तलाश रही है। इन तीनों कहानियों में ही नारी के अस्तित्व की लड़ाई, रूढ़िवादी सोच, अंधविश्वास, हकों की लड़ाई, अपने व्यक्तित्व की खोज, को उजागर करती है।

***सहायक प्रवक्ता**
****शोधार्थी**
हिन्दी विभाग
ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय,
जयपुर

संदर्भ सूची

1. माँ पृष्ठ 87
2. माँ पृष्ठ 91–92
3. आपकी छोटी लड़की पृष्ठ 124–125
4. आपकी छोटी लड़की पृष्ठ 126
5. आपकी छोटी लड़की पृष्ठ 126
6. बोलने वाली औरत पृष्ठ 202–203
7. ममता कालिया, थिएटर रोड के कौवे, हिन्दी का प्रथम संस्करण : पेंगुइन बुक्स इंडिया, यात्रा बुक्स, 2006। टाइप सेट : आकृति प्रिंटोग्राफिक्स, नई दिल्ली–110066